131
972 P
H
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1279/10121

आह्वानांक Call No. ____________

अवाप्ति सं० Acc. No. 972

891.431
Sh 23 M

॥ वन्देमातरम् ॥

महालक्ष्मी पुस्तकमाला का तृतीय पुष्प

मारवाड़ी राष्ट्र-गीत

लेखक और प्रकाशक

पं० सवाईराम शर्मा

C/O बड़ा बाज़ार

मु. पो० मलकापुर (बरार)

MALKAPUR-Berar

प्रथमावृत्ति १०००.   मूल्य १ आना.

श्री ईश्वर प्रिन्टींग प्रेस—महुधा में मुद्रित.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 972
Date 28.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
28 FEB. 1931

॥ वन्देमातरम् ॥

मारवाड़ी राष्ट्र-गीत

गायन नं० १

(तर्ज-पनजी मूँडे बोल)

चाल चाल तू सत्याग्रह ने, गांधी बुलावे रे, जल्दी चाल रे
अन्यायी सत्ताने मिटावा, देश बुलावे रे, जल्दी चाल रे ॥ध्रु.
जूनी बाताँ थने सुणावा, जी सूँ आफत आई रे,
आपस की फूटाँसूँ भारत, आ दशा बणाई रे, ॥ १ ॥
देश बण्यो परतन्त्र फूटसूँ, जुल्मी शासन पायो रे,
जूनो वैभव नष्ट कियो और, नाम गमायो रे जल्दी० ॥ २ ॥
ढाँका की मलमल भी छुपगई, बढ़िया माल स्वदेशी रे,
अबतो आवे भर भर बोटाँ, माल विदेशी रे, जल्दी ॥ ३ ॥
कितना ही महसूल बढा कर, परजा बणी भिखारी रे,
रामकृष्ण को गयो जमानो, आई नादारी रे, जल्दी० ॥ ४ ॥
गांधी जवाहिरलाल बुलावे, आवो करॉं तैयारी रे,
भारतने स्वाधीन बनावो, बिनती म्हारी रे, जल्दी० ॥ ५ ॥

गायन नं० २

[तर्ज-पनिहारी म्हो]

चालो चर्खा प्रेमसूँ, सुखदायक हो, दुःखनाशक हो
भारत का थे प्राण, दीन सहायक हो. ॥ ध्रू० ॥
बिगड़ी बाजी सुधारबा, गण नायक हो,
शंभु जैसा शुद्ध, थे फल दायक हो, ॥ १ ॥
थाँने अपनाया सुख ऊपजे, धन दायक हो
भारत की थे आन, दुःख निवारक हो, ॥ २ ॥
फिरसूँ भारत वर्ष, उन्नति दायक हो,
दीन जनों का आप, बिगड़ी सुधारक हो, ॥ ३ ॥
थाँरी मधुर आवाज में गुण गायक हो,
गांधी जी की शान, चर्खा नायक हो ॥ ४ ॥

गायन नं० ३

[तर्ज-सूंदड़ी]

लेना लेना जी खबरीयाँ, बन्धु अपणा देश की ॥ ध्रू० ॥
भारत माता तुम्हें बुलावें, सत्याग्रहसा मंत्र सिखावें
जिससे आज़ादी फिर पावें,
हालत हुई खराब गुलामी सूँ इण भारत देश की ॥ १ ॥
चर्खा कर्धाने अपणाओ, थानें खादी को सिलवाओ
मलमल सूँ अब प्रेम हटाओ.
जिणसूँ हिन्द बणें स्वाधीन गुलामी मिटजा देश की ॥ २ ॥

घर घर लूँण खूब बणवाओ, वन में गायाँ मुफ्त चराओ,
गुत्ता दारु का उठवाओ,
सत्ता अन्यायी मिटवाओ, बन्धु अपना देश की ॥ ३ ॥
चिंता जैल तणी अब छोड़ो मुख नहीं कर्त्तव्याँसूँ मोड़ो,
भारत माँ सूँ नेहा जोड़ो,
केवे शर्मा मन बिसराओ, उल्फत अपणा देश की ॥ ४ ॥

गायन नं० ४

(तर्ज–कोरी काजलियो)

हुओ देश महा दारिद्र्य अब क्यूँ चेतोनी ॥ ध्रु० ॥
जुल्मी शासनसूँ भारत पूर्ण हुओ है अब गारत
थे सोया गफ़लत नींद अब क्यूँ चेतोनी ॥ १ ॥
करो तैयारी मिलसारी सत्याग्रह करदो जारी,
थे भय राखो मत मित्र अब क्यूँ चेतोनी ॥ २ ॥
आवे पोलिस आवाद्यो, करे क़ैद तो करवाद्यो
थे मन में हिम्मत राख, अब क्यूँ चेतोनी ॥ ३ ॥
जैल तणी पर्वाह छोड़ो, भारतसूँ नेहा जोड़ो
यूँ गांधी केवे आज, अब क्यूँ चेतोनी ॥ ४ ॥

गायन नं ५

(तर्ज–तीतर बोल्यो क्यूँनीरे)

थे सत्याग्रह अपणाद्यो, कबतक आफत भोगोला ॥ ध्रु० ॥
नौकर शाही है जुल्मी, बन्द करो वार्ता इल्मी,
थे चुप बैठा क्यूँ घर में, कबतक आफत भोगोला ॥ १ ॥

भूखां मरैं थाँरा टाबर, मिटयो आज सारो आदर
हुओ देश महा दारिद्रय कबतक० ॥ २ ॥
घणा घणा महसूल बढा नया नया कानून बणा,
कर शोषण नीति जारी, कबतक० ॥ ३ ॥
चेतो थे केवे गांधी, बन्द करो गोरी आंधी,
हो थाँमें कुछ पुरुषार्थ, कबतक० ॥ ४ ॥

गायन नं० ६

(तर्ज-तूँ चाल सभा में चाल, मारा ढोला जी)
तूँ सत्याग्रह अपणाय, म्हारा बालमजी ॥ ध्रु० ॥
जुल्मी बणगयो देशधणी, आफत बढ गई प्रजातणी,
तू हिम्मत अपणी बढाय, म्हारा बालमजी ॥ १ ॥
पोलिस आकर पकड़ेला, डंडा बेड़ी जकड़ेला,
थे शांति व्रत दो निभाय, म्हारा० ॥ २ ॥
माफी माँग मतो लिख्यो, धणी बापजी मत कहिज्यो;
जौहर भारत माँ को दिखाय, म्हारा० ॥ ३ ॥
भय लागे लख हथकड़ियाँ, तो पहिनो म्हारी चुड़ियाँ
छुप जाओ आ घर के माय, म्हारा० ॥ ४ ॥
थारी पाघड़ीयाँ मैं बाँधा, थाँचो शस्त्र मैं साँधा,
जा सन्मुख रण के माय, म्हारा० ॥ ५ ॥
शर्मा केवे ज्यूँ कीज्यो, अपयश जग में मत लीज्यो,
अपयश खोटो जगमाय, म्हारा० ॥ ६ ॥

गायन नं० ७

(तर्ज़-गालियों की)

हाँ, करो सत्याग्रह जारी, ऐसा हुकम हुआ सरदारी,
बारडोली जैसी बन्धु, मिलकर थो त्यारीरे ॥ ध्रु० ॥
जुल्मी शासन त्रस्त बनाया, भारत को कमजोर बनाया,
शोषण नीति घणा करी, भारत की रुवारी रे ॥ १ ॥
मद्यपान से जनता सारी, हुई मूर्ख और पशुताधारी,
चेतो बन्धु दूर करो आ, पशुता सारीरे ॥ २ ॥
झीणा वस्त्रने दूर भगावो, खादीने पाछी अपणाओ,
चर्खा से हो मुक्ति देश की, करदो जारी रे ॥ ३ ॥
गांधीजी केवे ज्यूँ कीज्यो, टेक्स नहीं कुछ भी थे दीज्यो,
कहैं आपसूँ शर्मा आई, बिनती म्हारी रे ॥ ४ ॥

गायन नं० ८

(तर्ज़—गालियों की)

हाँ, सदा खादी अपणाओ, वस्त्र विदेशी दूर हटाओ ॥ध्रु०॥
नाथुराम जी वाली लाड़की, चर्खाने बुलाओ ॥ १ ॥
लज्जा रहसी खादीसूँ, अब मान बढाओ ॥ २ ॥
मेंचेष्टर के कपड़ासूँ, हुओ देश परायो ॥ ३ ॥
चाहो उन्नति भारत की, खादी अपणाओ ॥ ४ ॥
साठ करोड़ द्रव्य भारतसूँ, व्यर्थ गमाओ ॥ ५ ॥
अर्ज आपसूँ शर्मा की है, ध्यॉन लगाओ ॥ ६ ॥

गायन नं० ९

(तर्ज-दिल्ली खूब सजाई थी, देवपुरी दर्शाई थी)

खादीने अपणाओला, जद थे मुक्ति पाओला ॥ ध्रू० ॥
नाथूरामजी वाली बात सुणाऊँ, थाँने मैं किसविध समझाऊँ
चर्खासूँ ध्याँन लगाओला जद थे० ॥ १ ॥
विलायती कपड़ाने छोड़ो, खादीसूँ नेहाने जोड़ो,
गुण स्वदेश का गावोला जद० ॥ २ ॥
घूंघट काढो कर होशियारी, फिरभी दीखो नखशिख सारी
मनमें ख्याल बणाओला जद थे० ॥ ३ ॥
धन विदेश क्यूँ भेजो इणसूँ, करो बचत हा रक्षा जिणसूँ,
चर्खासूँ प्रेम जताओला जद० ॥ ४ ॥
गांधी नेहरू यूँ समझावे, वस्त्र स्वदेशी लाज बचावे,
हृदय को हार बणाओला जद० ॥ ५ ॥

गायन नं० १०

(तर्ज-आछी डुबाईरे नौका धर्म की)

चेतोरे भारत वासीरे, जागोरे भारत वासीरे,
सोचोरे भारत वासीरे, होवे है थाँरी हाँसीरे,
थाँरे कर्मांसूँ जगमें, डूब रहीरे नौका देशकी ॥ ध्रू० ॥
खादी त्याग भुलायो चर्खो, करी भयङ्कर भूल,
विलायती कपड़ो अपणाकर, कियो देश सब धूल.
भारतवासीरे० ॥ १ ॥

उपजात्यांका कड़ा नियमसूँ, देश हुओ बेहाल,
सुवर्ण भूमि मट्टी हो गई, गुलामी बानो डाल ॥ २ ॥
ईसाई यवनासूँ थारे, जरा नहीं परहेज,
अस्पृश्यांने दूर भगाओ, खूब धर्म की पेज ॥ ३ ॥
घरमें विधवा बेटी बेठी, थेंजा ब्याह रचाओ
बूढापामें लाय बीनणी, मनमें नहीं शर्माओ ॥ ४ ॥
पुनर्लग्नको नाम सुणो जद, अपनो रोष जताओ,
बनें विधर्मी वैश्या तो थे, फूल्याँ नहीं समाओ ॥ ५ ॥
कहँ आपसूँ शर्मा सोचो, भारत माँका लाल,
चेतो तो सुख पाओ, नहीं तो होवोगा बेहाल. ॥ ६ ॥

गायन नं० ११

(तर्ज-दर्शन ने आवे नरनार, गंगश्यामरी महिमा अपार)

होसी चर्खासूँ बेड़ो पार, बंधू खादीको करलो सिंगार ॥ध्रु०॥
स्वदेशीकी महिमा है भारी, मालवीयजी बरणी सारी,
केवे गांधीजी बारं बार ॥ बंधू० ॥ १ ॥
वस्त्र विदेशी आवण लागो, छूट गयो खादीको धागो,
हुओ देश दरिद्र अपार, बंधू० ॥ २ ॥
वस्त्र विदेशी लूँट मचाई, नादिर शाहने मात दिलाई,
जावे साठ करोड़ कल्दार, बंधू० ॥ ३ ॥

स्वदेशीने थे लाणी चाहो, गुलामीने थे मिटानी चाहो,
कपड़ो देशीको करो व्यवहार बन्धू० ॥ ४ ॥
सारा नेता यूं शिख देवें, सुभाष नेहरू गांधी केवे,
शर्मा करलो मनमें निर्धार बन्धू० ॥ ५ ॥

गायन नं० १२

(तर्ज-कुछ फर्कसूं " सरकार थाँरो पंचरंग फेटो भोजें ")
कही मान, झंडो फहरादो तिरंगी बन्धु आन, ॥ धृ० ॥
रजतम सत्व को भेद बतावें. कौमी झंडो गुण जतलावे,
भाव हिन्दको सब बतलावें, हृदयने साचो शुद्ध बनावें,
है प्राण, झंडो फहरादो० ॥ १ ॥
राष्ट्रीयता सिखलाने वालो, गुलामी कौमी मिटाने वालो,
स्वतंत्रता जतलाने वालो, मनमें हर्ष बताने वालो,
रख ध्यान, झंडो फह० ॥ २ ॥
प्राण रहें तक थने अपणास्यां, नीचे हर्गिज नहीं गिरास्यां,
भारतने आदर्श बणास्यां, हृदय पटलसूं थने लगास्यां
तूशान, झंडो० ॥ ३ ॥
गांधीजी की बात निभास्यां, चर्खासूं में प्रेम जतास्यां
खादी की पैदास बढास्यां, दारु का गुत्ता भी उठास्यां,
रख मान, झंडो० ॥ ४ ॥
विलायती कपड़ा की होली, घर घरमें होवें बार्डोली,
हल्दी घाटी थर्मा पोली, भय तजदेओ बरसे गोली,
आशान, झंडो फहरादो ॥ ५ ॥

यदि आप को क्रान्तिकारी सामाजिक उपन्यास पढ़-ना हो तो जरूर करके एकबार

"सच्ची—सफलता"

को पढ़िये मूल्य ॥)

"स्वाधीनता का बिगुल"

स्वदेशी की नामी गजलें मूल्य =)

पुस्तकें मिलने का पता—

पं० सवाईराम शर्मा,

बड़ाबाजार

मलकापुर (बरार)

यदि आप को किसी भी रोगपर आयुर्वेदिक शास्त्रोक्त औषधियों की आवश्यकता हो तो जरूर करके एकबार हमारे औषधालय को लिखिये, मंगानेपर खात्री होगी.

पता—

मेनेजर महावीर औषधालय,

मलकापुर (बरार)

Malkapur (G. I. P. Rly)